Topic- आधुनिक उर्दू कविता में राष्ट्रवादी चिंतन।

जिस प्रकार संस्कृत साहित्य में और हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवादी चिंतन वर्णित हैं उसी प्रकार उर्दू साहित्य में भी हमें राष्ट्रवादि चिंतन विस्तृत रूप से देखने को मिलता है। उर्दू साहित्य में राष्ट्रवादी चिंतन हेतु कुछ प्रमुख उर्दू लेखक हैं जो निम्न प्रकार से है। (According to Syllabus)

1. मुहम्मद इकबाल। **(Completed)**

2. फिराक गोरखपुरी।

3. सागर निज़ामी।

4. अफ़सर मेरठी।

5. अली सरदार जाफ़री।

<u>फिराक गोरखपुरी</u> –

फिराक गोरखपुरी (28 अगस्त 1896 - 3 मार्च 1982) का मूल नाम रघुपति सहाय है। उर्दू भाषा के प्रसिद्ध रचनाकार हैं। इनका जन्म गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में कायस्थ परिवार में हुआ। रामकृष्ण की शिक्षा अरबी, फारसी और अंग्रेजी में हुई। 29 जून, 1914 को इनका विवाह प्रसिद्ध जमींदार विन्देश्वरी प्रसाद की बेटी किशोरी देवी से हुआ। कला स्नातक में पूरे प्रदेश में चौथा स्थान पाने के बाद आई.सी.एस. में चुने गये।

1920 में नौकरी छोड़ दी तथा स्वराज्य आंदोलन में कूद पड़े तथा डेढ़ वर्ष की जेल की सजा भी काटी । जेल से छूटने के बाद जवाहरलाल नेहरू ने इन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस के दफ्तर में अवर सचिव की जगह दिला दी । बाद में नेहरू जी के यूरोप चले जाने के बाद अवर सचिव का पद छोड़ दिया । फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 1930 से लेकर 1959 तक अंग्रेजी के अध्यापक रहे । फिराक जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापक रहे ।

1970 में इनकी उर्दू काव्यकृति 'गुले नग़मा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला । इन्हें गुले-नग्मा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड से सम्मानित किया गया । बाद में 1970 में इन्हें साहित्य अकादमी का सदस्य भी मनोनीत कर लिया गया था । फिराक गोरखपुरी को साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1968 में भारत सरकार ने पद्म भूषण से सम्मानित किया था।

फिराक गोरखपुरी की शायरी में गुल-ए-नगमा, मश्अल, रूह-ए-कायनात, नग्म-ए-साज, ग़ज़लिस्तान, शेरिस्तान, शबनमिस्तान, रूप, धरती की करवट, गुलबाग, रम्ज व कायनात, चिरागां, शोअला व साज, हजार दास्तान, बज्मे जिन्दगी रंगे शायरी के साथ हिंडोला, जुगनू, नकूश, आधीरात, परछाइयाँ और तरान-ए-इश्क जैसी खूबसूरत नज्में और सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जैसी रुबाइयों की रचना फिराक साहब ने की है । इन्होंने एक उपन्यास 'साधु और कुटिया' और कई कहानियाँ भी लिखी हैं । उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी भाषा में दस गद्य कृतियां भी प्रकाशित हुई हैं ।

फिराक ने अपने साहित्यिक जीवन का श्रीगणेश गजल से किया था । अपने साहित्यिक जीवन में आरंभिक समय में 6 दिसंबर, 1926 को ब्रिटिश सरकार के राजनैतिक

बंदी बनाए गए । उर्दू शायरी का बड़ा हिस्सा रूमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता से बँधा रहा है जिसमें लोकजीवन और प्रकृति के पक्ष बहुत कम उभर पाए हैं ।

नजीर अकबराबादी, इल्ताफ हुसैन हाली जैसे जिन कुछ शायरों ने इस रिवायत को तोड़ा है, उनमें एक प्रमुख नाम फिराक गोरखपुरी का भी है । फिराक ने परंपरागत भावबोध और शब्द-भंडार का उपयोग करते हुए उसे नयी भाषा और नए विषयों से जोड़ा । इनके यहाँ सामाजिक दुख-दर्द व्यक्तिगत अनुभूति बनकर शायरी में ढला है ।

दैनिक जीवन के कड़वे सच और आने वाले कल के प्रति उम्मीद, दोनों को भारतीय संस्कृति और लोकभाषा के प्रतीकों से जोड़कर फिराक ने अपनी शायरी का अनूठा महल खड़ा किया । फारसी, हिंदी, ब्रजभाषा और भारतीय संस्कृति की गहरी समझ के कारण इनकी शायरी में भारत की मूल पहचान रच-बस गई है ।